ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 110-112**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

सांस्कृतिक पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द सरस्वती का अवदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रजनीश सिंह, 2. डॉ0 बेद प्रकाश शुक्ला

शोध अध्येता, 2. शोध पर्यवेक्षक व वरिष्ठ सहायक आचार्य– दर्शनशास्त्र, डी0 ए0 वी0 कॉलेज, कानपुर नगर (उ0प्र0) भारत

Received-24.04.2026, Revised-02.05.2026, Accepted-10.05.2026, **E-mail:singhrajneesh1986@gmail.com**

***सारांशः** उन्नीसवीं शताब्दी का भारत सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से अनेक कुरीतियों, अंधविश्वासों और रूढ़ियों से ग्रस्त था। भारतीय समाज जाति–पांति, छुआछूत, बाल–विवाह, सती–प्रथा तथा स्त्री–अशिक्षा जैसी समस्याओं से जूझ रहा था। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतीय समाज के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने वैदिक संस्कृति के पुनर्स्थापन का आह्वान करते हुए "वेदों की ओर लौटो" का संदेश दिया। स्वामी दयानन्द ने धर्म को तर्क, विज्ञान और नैतिकता के आधार पर समझने की प्रेरणा दी। उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों को नई दिशा प्रदान की। उनके प्रयासों से शिक्षा, स्त्री–उत्थान, सामाजिक समानता तथा राष्ट्रीय चेतना को बल मिला। प्रस्तुत लेख में स्वामी दयानन्द सरस्वती के सांस्कृतिक पुनर्जागरण संबंधी योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।*

***कुंजीभूत शब्द–** सांस्कृतिक पुनर्जागरण, कुरीतियां, अंधविश्वास, रूढ़ियां, जाति–पांति, छुआछूत, बाल–विवाह, सती–प्रथा, वैदिक संस्कृति।*

प्रस्तावना– भारतीय इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी को नवजागरण और पुनर्जागरण का काल कहा जाता है। यह वह समय था जब भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था और पश्चिमी शिक्षा तथा संस्कृति का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। एक ओर भारतीय समाज परंपरागत कुरीतियों से ग्रस्त था, तो दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के लिए चुनौती बन रहा था।

ऐसे संक्रमणकाल में अनेक समाज–सुधारकों ने भारतीय समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया। इनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा को वैदिक ज्ञान में देखा व समाज को वैदिक आदर्शों की ओर लौटने का संदेश दिया। उनका मानना था कि भारत की प्रगति का मार्ग उसकी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत में निहित है।

स्वामी दयानन्द केवल धार्मिक सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक चिंतक, शिक्षाविद्, राष्ट्रवादी तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत भी थे। उनके विचारों ने भारतीय समाज में आत्मविश्वास, स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। इस प्रकार उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण को एक सशक्त आधार प्रदान किया।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अवधारणा– सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अर्थ किसी समाज की सांस्कृतिक चेतना, मूल्यों, परंपराओं और ज्ञान–संपदा का पुनरुत्थान एवं पुनर्स्थापन है। भारतीय संदर्भ में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का तात्पर्य भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ परंपराओं को पुनर्जीवित कर समाज को आधुनिक चुनौतियों के अनुरूप विकसित करना था।

स्वामी दयानन्द ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण को केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं माना, बल्कि उन्होंने वैदिक ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जोड़ने का प्रयास किया। उनके अनुसार संस्कृति तभी जीवित रह सकती है जब वह तर्कसंगत, नैतिक और समाजोपयोगी हो।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन परिचय– स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर हुआ था। उनका मूल नाम मूलशंकर था। बचपन से ही उनमें धार्मिक जिज्ञासा थी। शिवरात्रि के अवसर पर मंदिर में चूहे द्वारा शिवलिंग पर चढ़ाए गए प्रसाद को खाते देखकर उनके मन में मूर्तिपूजा के प्रति प्रश्न उत्पन्न हुआ।

सत्य की खोज में उन्होंने घर त्याग दिया और अनेक वर्षों तक विभिन्न विद्वानों एवं संतों के संपर्क में रहे। अंततः मथुरा में स्वामी विरजानन्द के शिष्य बने। अपने गुरु से वैदिक ज्ञान प्राप्त कर उन्होंने समाज सुधार और वैदिक धर्म के प्रचार का संकल्प लिया।

1875 में उन्होंने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। उनकी प्रसिद्ध कृति सत्यार्थ प्रकाश भारतीय समाज एवं धर्म सुधार का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। 30 अक्टूबर 1883 को उनका निधन हो गया, किंतु उनके विचार आज भी भारतीय समाज को प्रेरित करते हैं।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द सरस्वती के योगदान की प्रासंगिकता– Swami Dayanand Saraswati उन्नीसवीं शताब्दी के भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रमुख अग्रदूतों में से एक थे। उन्होंने भारतीय समाज को अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, जातिगत भेदभाव तथा सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कराने का प्रयास किया। उनके द्वारा स्थापित ।तलं`उंर ने भारतीय समाज में नवचेतना, आत्मगौरव और वैदिक मूल्यों के पुनर्स्थापन का कार्य किया।

स्वामी दयानन्द के योगदान की वर्तमान प्रासंगिकता–

1. **वैदिक संस्कृति का पुनर्जागरणः** स्वामी दयानन्द ने "वेदों की ओर लौटो" का संदेश देकर भारतीय संस्कृति के मूल स्रोतों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया। आज भी भारतीय सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाने में उनके विचार महत्वपूर्ण हैं।
2. **सामाजिक सुधार की प्रेरणाः** उन्होंने बाल–विवाह, सती–प्रथा, छुआछूत और जातिगत ऊँच–नीच का विरोध किया। वर्तमान समय में सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए उनके विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं।
3. **महिला सशक्तिकरणः** स्वामी दयानन्द स्त्री शिक्षा और महिलाओं के अधिकारों के समर्थक थे। आज जब लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर विशेष बल दिया जा रहा है, तब उनके विचार मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।
4. **शिक्षा के क्षेत्र में योगदानः** उन्होंने आधुनिक एवं वैदिक शिक्षा के समन्वय पर बल दिया। उनके विचारों से प्रेरित होकर अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण की आवश्यकता को देखते हुए उनका दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।
5. **राष्ट्रीय चेतना का विकासः** स्वामी दयानन्द ने भारतीयों में आत्मसम्मान और स्वदेश–प्रेम की भावना जागृत की। उनके विचारों ने स्वतंत्रता आंदोलन के अनेक नेताओं को प्रेरित किया। आज भी राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय एकता के लिए उनका योगदान प्रेरणास्रोत है।
6. **वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोणः** उन्होंने धर्म को तर्क और विवेक के आधार पर समझने का आग्रह किया। अंधविश्वास और मिथ्या आस्थाओं से मुक्त समाज के निर्माण में उनकी विचारधारा आज भी उपयोगी है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

सांस्कृतिक पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान–

1. वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थानः स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान वैदिक संस्कृति का पुनर्जागरण था। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि वेद समस्त ज्ञान का स्रोत हैं और उनमें मानव कल्याण का मार्ग निहित है।

उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" का नारा देकर भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का प्रयास किया। उनके अनुसार वेदों में विज्ञान, दर्शन, नैतिकता तथा सामाजिक व्यवस्था का समन्वित स्वरूप मिलता है।

वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान ने भारतीयों में अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न की।

2. अंधविश्वास एवं रूढ़ियों का विरोधः स्वामी दयानन्द ने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, कर्मकांडों तथा रूढ़ियों का विरोध किया। उन्होंने मूर्तिपूजा, तीर्थों के नाम पर होने वाले शोषण, पाखंड तथा अवैज्ञानिक मान्यताओं की आलोचना की।

उनका मानना था कि धर्म का आधार तर्क, ज्ञान और सत्य होना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने भारतीय समाज को वैज्ञानिक सोच अपनाने के लिए प्रेरित किया और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को गति प्रदान की।

3. जाति–व्यवस्था के विरुद्ध संघर्षः दयानन्द सरस्वती ने जन्म–आधारित जाति व्यवस्था का विरोध किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य की श्रेष्ठता जन्म से नहीं बल्कि उसके गुण, कर्म और स्वभाव से निर्धारित होती है।

उन्होंने सामाजिक समानता और मानव–मर्यादा पर बल दिया। इससे समाज में व्याप्त भेदभाव को चुनौती मिली और सांस्कृतिक चेतना का विकास हुआ।

4. स्त्री–शिक्षा और महिला सशक्तिकरणः स्वामी दयानन्द ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देने की वकालत की। उन्होंने स्त्री–शिक्षा का समर्थन किया और बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा तथा बहुविवाह का विरोध किया।

उनका मानना था कि समाज की उन्नति महिलाओं की उन्नति के बिना संभव नहीं है। उन्होंने वैदिक उदाहरणों द्वारा सिद्ध किया कि प्राचीन भारत में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था।

महिला शिक्षा के प्रति उनके विचारों ने भारतीय समाज में नई चेतना का संचार किया।

5. शिक्षा के क्षेत्र में योगदानः स्वामी दयानन्द ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख साधन माना। उनके अनुयायियों ने डी.ए.वी. (DAV) विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना की, जहाँ आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों का भी समावेश किया गया।

इन संस्थानों ने राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक गौरव और आधुनिक ज्ञान के समन्वय को बढ़ावा दिया। शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक पुनर्जागरण को व्यापक आधार प्राप्त हुआ।

6. हिंदी भाषा और राष्ट्रभाषा की भावनाः स्वामी दयानन्द ने हिंदी को जनसंपर्क और राष्ट्रीय एकता की भाषा के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने अपने अधिकांश प्रवचन और लेखन हिंदी में किए।

उनके प्रयासों से हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को बल मिला। इससे राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक चेतना के विकास में सहायता मिली।

7. राष्ट्रीय चेतना का विकासः यद्यपि स्वामी दयानन्द प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक आंदोलन से जुड़े नहीं थे, फिर भी उनके विचारों ने भारतीय राष्ट्रवाद को गहरा प्रभाव प्रदान किया।

उन्होंने स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय गौरव पर बल दिया। उनके विचारों से प्रेरित होकर अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्र सेवा का मार्ग अपनाया।

इस प्रकार सांस्कृतिक पुनर्जागरण के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय जागरण का मार्ग प्रशस्त किया।

8. आर्य समाज की स्थापनाः 1875 में स्थापित आर्य समाज स्वामी दयानन्द के विचारों को समाज तक पहुँचाने का प्रमुख माध्यम बना। आर्य समाज ने शिक्षा, समाज सुधार, महिला उत्थान, अस्पृश्यता उन्मूलन तथा धार्मिक सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। आर्य समाज ने भारतीय समाज में आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गौरव की भावना को मजबूत किया। इसके माध्यम से सांस्कृतिक पुनर्जागरण जन–आंदोलन का रूप ग्रहण कर सका।

9. धार्मिक सुधार और एकेश्वरवादः स्वामी दयानन्द ने एकेश्वरवाद का समर्थन किया और वेदों के आधार पर ईश्वर की निराकार अवधारणा को प्रस्तुत किया। उन्होंने धर्म को नैतिक जीवन और सामाजिक कल्याण से जोड़ा।

धार्मिक सुधार के उनके प्रयासों ने भारतीय समाज को सांप्रदायिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दी।

10. स्वाभिमान और आत्मविश्वास का विकासः अंग्रेजी शासन के दौरान भारतीयों में हीनभावना बढ़ रही थी। स्वामी दयानन्द ने भारतीय संस्कृति की महानता का वर्णन कर लोगों में आत्मविश्वास और स्वाभिमान का संचार किया।

उन्होंने भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि उनकी सांस्कृतिक परंपरा किसी भी दृष्टि से पश्चिमी सभ्यता से कम नहीं है। यह भावना सांस्कृतिक पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण आधार बनी।

स्वामी दयानन्द के विचारों का प्रभाव– स्वामी दयानन्द के विचारों का प्रभाव केवल उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं रहा। उनके विचारों से प्रेरित होकर अनेक सामाजिक और राष्ट्रीय आंदोलनों का विकास हुआ।

लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज तथा अनेक अन्य नेताओं ने उनके सिद्धांतों को आगे बढ़ाया। आर्य समाज के माध्यम से शिक्षा, समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना के क्षेत्र में व्यापक कार्य हुए।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी उनके विचारों का अप्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण द्वारा उत्पन्न आत्मगौरव की भावना ने राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक शक्ति प्रदान की।

आलोचनात्मक मूल्यांकन– स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, किंतु कुछ विद्वानों ने उनके विचारों की आलोचना भी की है। कुछ आलोचकों का मत है कि उन्होंने वेदों को अत्यधिक महत्व दिया और अन्य धार्मिक परंपराओं के प्रति अपेक्षाकृत कठोर दृष्टिकोण अपनाया।

फिर भी यह तथ्य निर्विवाद है कि उनके सुधारवादी प्रयासों ने भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने अंधविश्वास, सामाजिक विषमता और सांस्कृतिक हीनभावना के विरुद्ध संघर्ष कर आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनका योगदान सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय जागरण के क्षेत्र में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

निष्कर्ष– स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। उन्होंने वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान, सामाजिक सुधार, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा के प्रसार तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विचारों ने भारतीय समाज को अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और हीनभावना से मुक्त होने की प्रेरणा दी।

सामाजिक सुधार, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, राष्ट्रीय चेतना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के क्षेत्रों में उनके विचार आज भी समाज को दिशा प्रदान करते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का सांस्कृतिक पुनर्जागरण में योगदान केवल ऐतिहासिक महत्व का विषय नहीं है, बल्कि वर्तमान भारतीय समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

आर्य समाज की स्थापना तथा सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति को नई ऊर्जा प्रदान की। उनके प्रयासों ने आधुनिक भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की आधारशिला रखी।

इसलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती को भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अग्रदूत और राष्ट्रनिर्माता कहा जाना पूर्णतः उचित है, और उनका योगदान भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आधारशिला के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली।
2. जोधा सिंह, स्वामी दयानन्द और आर्य समाज, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
3. रामविलास शर्मा, भारतीय नवजागरण और स्वामी दयानन्द, वाणी प्रकाशन।
4. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
5. बिपिन चन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वान।
6. सतीश चन्द्र मित्तल, आर्य समाज का इतिहास, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. के. सी. यादव, स्वामी दयानन्द सरस्वती और भारतीय पुनर्जागरण, रावत पब्लिकेशन्स।
8. ए. आर. देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन।
9. आर्य समाज प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज का इतिहास एवं योगदान।
10. सुमित सरकार, आधुनिक भारत, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड।

*****